एकीकृत रोग प्रबन्धन

1. रोग रोधी प्रजातियों का प्रयोग :-

कोशा 767, को 0238, कोल 94184, कोशा 97264 कोजे 88, कोसे 1434 आदि रोग रोधी संस्तुति प्रजातियों की ही बुआई करें।

2. शुद्ध बीज का चुनाव :-

प्रभावित पौधें एवं रोग रहित खेत से ही बीज का चुनाव करें एवं टुकड़ों की कटाई के समय यदि कोई टुकड़ा रोग ग्रसित दिखाई देता है उसे तुरन्त अलग कर दें।

3. ताप शोधन :-

बीज के तापशोधन से कण्डवा व घासीय प्ररोह रोग से पूर्णतया छुटकारा मिल जाता है।

4. फफूँद नाशक से बीज शोधन :-

बुआई से पूर्व कार्बेन्डेजिम के 0.1% घोल में बीज का शोधन आवश्यक है।

5. मृदा शोधन :-

मृदा जनित रोग जैसे पेड़ों का सड़ना (पाइन एप्पिल रोग), उकठा आदि के रोकथाम हेतु अंकुश (ट्राईकोडरमा) 5 कि०ग्रा० प्रति एकड़ को 200 कि०ग्रा० गोबर की खाद में मिला कर अंतिम जुताई के समय दें।

6. पेड़ी का बहिष्कार :-

यदि किसी बावग गन्ने में रोग का आपतन अधिक हो तो उसकी पेड़ी न लें।

7. फसल चक्र अपनाना :-

रोग के अत्यधिक आपतन होने पर एक वर्ष तक गन्ना न बोयें। फसले धान-गेहूँ ले सकते है।

8. खेत में यदि कोई गन्ने का थान रोग से प्रभावित दिखाई दें तो उसे जमीन से निकाल कर जला कर नष्ट कर दें।

ध्यान दें -

कोई भी कीट व रोग का प्रकोप दिखने पर तत्काल चीनी मिल के गन्ना विकास विभाग को सूचित करें जिससे इसके नियंत्रण हेतु प्रभावी कार्यवाही की जा सकें।